डॉ० कविता कुमारी सिंह

स्नातकोत्तर हिन्दी-विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

तृतीय सेमेस्टर (पी० जी०) - चतुर्दश पत्र

विषय— रस सिद्धान्त - रस की अवधारणा -

भारतीय काव्य-शास्त्र में सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है - रस। संस्कृत में रस-शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार की गई है - "रस्यते इति रसः"। अर्थात जिसका आस्वादन किया जाय, वही रस है। अथवा "सरते इति रसः" अर्थात जो बहे, वह रस है। रस काव्य की आत्मा है। रस शब्द आनन्द के अर्थ में प्रचलित है। भरतमुनि के रस सूत्र के अनुसार-
"विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"
अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस निष्पत्ति होती है। 'निष्पत्ति' शब्द का प्रयोग भरत मुनि ने रस सूत्र में किया। 'शंकुक' के अनुसार भरतमुनि के रस सूत्र

में आगे 'संयोग' शब्द का अर्थ अनुमान है। भरतमुनि के अनुसार जिस प्रकार अनेक तरह के व्यंजनों, औषधियों एवं द्रव्य पदार्थों के मिश्रण से भोज्य रस की निष्पत्ति होती है, उसी प्रकार नाना प्रकार के भावों के संयोग से स्थायी भाव भी नाट्य रस को प्राप्त हो जाते हैं।"

भरतमुनि के रस विवेचन का सार –

① रस आस्वाद्य होता है, आस्वाद नहीं।

② रस अनुभूति का विषय है, वह अपने में कोई अनुभूति नहीं है।

(3) रस विषयगत होती है, विषयीगत नहीं। भरतमुनि विषयगत रूप में रस की व्याख्या करते हैं।

(4) स्थायी भाव, विभावादि के संयोग से परिणत होता है।

(5) रस का मूल आधार यही स्थायी भाव है जो रस तो नहीं, परन्तु विभावादि के संयोग से रस के रूप में बदल जाता है।

Life was always a matter of waiting for the right moment to act. – Paulo Coelho

(6) नायक, नायिका (अभिनेता) का स्थायीभाव ही रस के रूप में बदलता है।

नाट्यशास्त्र में भरतमुनि ने रसों की संख्या आठ मानी है। शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत। दण्डी ने भी आठ रसों का ही उल्लेख किया है।

भरतमुनि ने वीररस के तीन भेद माना है - युद्धवीर, दानवीर एवं धर्मवीर।

मम्मट ने शांत रस का स्थायीभाव निर्वेद का मानकर रसों की संख्या नौ कर दी। उन्होंने शांत रस का स्थायीभाव तन्मन्यता या तन्मयवाद को माना है।

विश्वनाथ ने 'रति या वत्सल' को स्थायी-भाव मानकर 'वात्सल्य' नामक 10 वें रस का प्रतिपादन किया है। उन्होंने ही रस को काव्य की आत्मा घोषित किया और रस के स्वरूप पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। विश्वनाथ के अनुसार जब मन में तमोगुण

F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F
3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

और रजोगुण दब जाते हैं और सत्वगुण का उद्रेक और प्राबल्य होता है, तभी रस की अनुभूति होती है। 'रूपगोस्वामी' ने 'देव विषयक रति' को स्थायीभाव मानकर 'भक्ति रस' नामक 11वें रस का प्रतिपादन किया है। उन्होंने पाँच प्रकार की भक्ति के आधार पर पाँच प्रकार के रसों की कल्पना की और उन्हें शांत, दास्य (प्रीति), सख्य, वात्सल्य एवं माधुर्य कहा है।

भरत मुनि के अनुसार नाटक का मुख्य ध्येय रस निष्पत्ति है। उन्होंने "सौद्राच्च करुणो रसः" कहकर करुण रस की उत्पत्ति रौद्र रस से मानी है। अलंकारवादी आचार्य भामह ने रस को 'अलंकार्य' न मानकर 'अलंकार' माना है। उन्होंने विभाव को ही रस माना है।

अलंकारवादी आचार्य रुद्रट ने रस को अलंकार की दासता से मुक्त कर, उसे स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया है।

Self-belief and hard work will always earn you success. – Virat Kohli